हे मन मोहन अब आ जाओ

एक बार चले आओ
इन अंखियों की ज्योति हो तुम
प्राणों के प्रिय मोती हो तुम
घुटनों के बल चल कर आओ

आ जाओ धूल लपेटे तन में
मिट्टी मुख में भर कर आओ
रोते हंसते गिरते पड़ते
पालना छोड़ कर आ जाओ

दधि दूध और माखन मिश्री
जो मन भावे ओ पा जाओ
हम नैन बिछाए बैठे हैं
हे मन मोहन अब आ जाओ

-अर्द्धचंद्रधारी त्रिपाठी

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/16721/title/he-man-mohan-ab-aa-jao

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |